



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

C. K. ...
1.1.85

सं० 165]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 7, 1984/कार्तिक 16, 1906

No. 165]

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 7, 1984/KARTIKA 16, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

राष्ट्रपति सचिवालय

प्रधिसूचना

नई दिल्ली, 7 नवम्बर, 1984

संख्या 114-प्रेष/84:—भारत की महान नेता एवं प्रिय प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी की 31 अक्टूबर, 1984 को निर्मम हत्या से सम्पूर्ण राष्ट्र गहरे शोक और दुःख में डूब गया है। अपने यशस्वी पिता, जवाहर लाल नेहरू की भांति इन्दिरा गांधी केवल भारत की ही नहीं बल्कि समस्त मानवजाति की थीं। इनके निधन से विश्व ने एक उत्कृष्ट राजनेता को खो दिया है।

इन्दिरा गांधी का जन्म 19 नवम्बर, 1917 को इलाहाबाद में हुआ था। आपका बाल्यकाल महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू तथा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अन्य महान नेताओं की छत्रछाया में बीता। बचपन से ही आप राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेती रहीं। सन् 1930 के आन्दोलन के दौरान आपने स्वतन्त्रता सेनानियों की सहायता के लिए बच्चों की ब्रिगेड "बालर सेना" बनाई।

1920 के दशक के अन्तिम वर्षों में आपकी शिक्षा यूरोप में हुई, जहाँ आपकी माता इलाज के लिए गई हुई थीं और बाद में आपने पुनः और बर्म्ह में शिक्षा ग्रहण की। 1934 में आप रवीन्द्र नाथ ठाकुर की विश्व शांति में शामिल हुईं, किन्तु कुछ महीने बाद अपनी बीमार माँ के

साथ यूरोप जाने के कारण आपको विश्व भारती छोड़ना पड़ा। 1936 में लॉरेन, स्विट्जरलैंड में कमला नेहरू की मृत्यु हो गयी। अगले वर्ष इन्दिरा गांधी ने सोमरविल कालेज, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया।

आपके पिता जवाहर लाल नेहरू के जेल से आपको लिखे हुए पत्रों ने आपके बौद्धिक जीवन को रचनात्मक रूप से प्रभावित किया। उनमें पत्रों से, जो बाद में "पिता के पत्र पुत्री के नाम" और "विश्व इतिहास की झलक" नाम से प्रकाशित हुए, आपमें कुतूहल की प्रवृत्ति जागृत हुई, जिसने आपकी अन्वेषण और जिज्ञासा की भावना का विकास किया। इसके फलस्वरूप, आप विश्व सभ्यता की अपार समृद्धि की उत्तराधिकारिणी बनीं, किन्तु साथ ही भारतीय संस्कृति से पूर्णतः सन्तुष्ट रहीं।

1938 में आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य बनीं। मार्च, 1941 में भारत लौटने पर आप तुरन्त सक्रिय राजनीति में आ गईं। 26 मार्च, 1942 को आपका विवाह फिरोज गांधी के साथ सम्पन्न हुआ, जो स्वयं भी एक वीर स्वतन्त्रता सेनानी थे और कई वर्षों से आपके परिवार के परिचित थे। आपने अगस्त, 1942 में प्रखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में भाग लिया जिसमें प्रसिद्ध "भारत छोड़ो" संकल्प पारित किया गया था। इसके तुरन्त बाद आपको गिरफ्तार कर लिया गया और जेल भेजा गया। मई, 1943 में आपको रिहा किया गया। अगस्त, 1944 में, आपके प्रथम पुत्र राजीव का जन्म हुआ। आपके दूसरे पुत्र संजय का जन्म दिसम्बर, 1946 में हुआ।

(1)

1947 में भारत के स्वतन्त्र होने पर आपके सार्वजनिक जीवन का नया दौर शुरू हुआ। आपने प्रधान मंत्री के निवास-स्थान के संचालन का उत्तरदायित्व संभाला। इसके अतिरिक्त, आप सामाजिक तथा बाल कल्याण कार्य में पूरी तरह जुटी रहें। महत्वपूर्ण राजनैतिक भूमिकाएं निभाने के लिए आप जल्दी ही कांग्रेस की ओर आकर्षित हो गईं, जो आस्थाकाल से ही आपका राजनैतिक क्षेत्र था। आप पहले 1955 में कांग्रेस कार्यकारिणी की सदस्य और बाद में 1958 में केन्द्रीय संसदीय बोर्ड की सदस्य बनीं। 1959 में, आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गईं। आपने भारतीय समाज की बुनियादी समस्याओं के प्रति कांग्रेस की विचारधारा एवं कार्यों को नई दिशा दी, और राष्ट्र के निर्माण कार्य में युवापीढ़ी को अनुप्राणित किया।

सितम्बर, 1960 में फिरोज गांधी का देहास्त हो गया।

मई, 1964 में जब जवाहर लाल नेहरू का निधन हुआ, उस समय लाल बहादुर शास्त्री ने आपसे मंत्रिमंडल में शामिल होने का प्रार्थन किया और आप सूचना व प्रसारण मंत्री बनीं। 1965 में, तमिलनाडु में व्यापक स्तर पर भाषायी बंने भड़क उठने पर, आप फौरन उस राज्य में गयीं, और अपने व्यवहार कौशल, सूझ-बूझ तथा नीति निपुणता से वहाँ के लोगों की उत्तेजित भावनाओं को शांत कर, स्थिति को नियंत्रण में किया।

लाल बहादुर शास्त्री के निधन के बाद, 19 जनवरी, 1966 को आप कांग्रेस संसदीय पार्टी की नेता चुनी गईं और 24 जनवरी, 1966 को आपको प्रधान मंत्री पद की शपथ दिलाई गई। आप उच्च हैतिम से मार्च, 1977 तक राष्ट्र का नेतृत्व करती रहें। 1967 के आम चुनावों में अपनी पार्टी को सफलता दिलाकर, आपने कांग्रेस में प्रगतिशील, सामाजिक व आर्थिक नीति के रूप में अनेक कदम उठाए। पूर्व-प्रवर्तित स्थिति तथा स्वार्थी तत्वों के खिलाफ आपके संघर्ष के फलस्वरूप तोड़े सैद्धांतिक विवाद उत्पन्न हुए और 1969 में कांग्रेस का विभाजन हुआ। भारी संघर्ष में कांग्रेसजन एवं महिलाएं आपके साथ रहें। 1971 के आम चुनावों में आप निर्णायक बहुमत के साथ पुनः सत्ता में आयीं, जो इन बात का उचित उदाहरण है कि जनता आपके मोति-निर्णयों की समर्थक रहें।

जून, 1975 में आपको मजबूर होकर, संविधान सम्मत सत्ता उलटने के खतरे का सामना करने के लिए देश में आंतरिक आपात-स्थिति को घोषणा करनी पड़ी। 1977 के शुरू में आपने लोकसभा के लिए आम चुनावों की घोषणा की, जिसमें कांग्रेस पार्टी को पराजय हुई। 1977—1980 के दौरान, जब आप सत्ता से बाहर थीं, तो जनता को आपके खिलाफ चलाये जा रहे जुमल और निन्दा के एक सुनियोजित अभियान के दौरान आपका अदम्य साहज देखने को मिला। आपको तथा आपके परिवार की बदनामी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गयी। छोटी-छोटी कुछ बातों को लेकर आपके विरुद्ध अनेक मुकदमे चलाए गये। आपको ऐसे आरोपों पर गिरफ्तार कर जेल भेजा गया जो न्यायिक छावबोन करने पर सही नहीं पाये गए। यद्यपि, एक उज-बुनाव में आप लोकसभा के लिए चुन ली गयीं, तो भी मतदाताओं के निर्णय को पूर्ण अज्ञेयता करते हुए आपको लोकसभा की अपनी सीट से बैजित रखा गया। आपने इन सबका निर्विकार भाव से एवं बीरता के साथ भामना किया, और पबदलित तथा उत्पीड़ित समाज की हिमायत करती रहें। उस दौरान आप जहाँ भी गयीं, लाखों-करोड़ों लोग आपके प्रति अपना स्नेह और आश्चर्य, एवं आपके नेतृत्व में अपना विश्वास व्यक्त करने के लिए उभड़ पाते थे। जनवरी, 1980 के आम चुनावों में जनता आपको भारी बहुमत के साथ पुनः सत्ता में ले आई।

कांग्रेस के बुनियादी सिद्धांतों और जनवादी धारणा के प्रति आपके वृद्ध संकल्प के कारण 1978 के प्रारंभ में आपको अपनी पार्टी में एक और विभाजन का सामना करना पड़ा।

इन्दिरा गांधी के नेतृत्व वाले महत्वपूर्ण वर्षों में भारतीय समाज में भारी परिवर्तन आया। नेहरू युग की बुनियादी नीतियों और कूटनीतियों को बरकरार रखते हुए आपने राष्ट्रीय विचार मंच पर गरीबी के मसले को प्रमुख स्थान देते हुए राजनीति के ढांचे का स्वरूप ही बदल दिया। समता-वादी उन्नित समाज व्यवस्था के प्रति आपकी बचनबद्धता उन ऐतिहासिक कार्यों की शृंखलाओं में परिलक्षित होती है जिनका श्रीगणेश बैंकों के राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स के उन्मूलन से हुआ। इस प्रक्रिया की परिणति 20-सूत्री कार्यक्रम के निर्माण और कार्यान्वयन के रूप में हुई जिसमें निर्धन वर्ग की दशा सुधारने की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।

राष्ट्र की एकता और एकता के लिए आप अपने प्रयासों में निरंतर जुटी रहें। आप संविधान के धर्म निरपेक्षता के प्रावनों की कट्टर समर्थक थीं। आपने अल्पसंख्यकों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए अथक कार्य किया। उनके कल्याण के प्रति आपकी व्यंगता और चिन्ता, उनके धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों को रक्षा करते और उनके लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के वास्ते सरकार द्वारा किये गये विशेष उपायों के रूप में प्रकट होती है। आपने साम्प्रदायिक हिंसा समाप्त करने के लिए अथक संघर्ष किया, जिसे आप “भारत के नाम पर कलंक का टीका” कहती थीं।

एक आधुनिक आत्म-निर्भर तथा प्रगतिशील अर्थ-व्यवस्था की आपकी कल्पना भारतीय कृषि, उद्योग और विज्ञान के क्षेत्र में की गई तीव्र प्रगति के रूप में साकार हुई। कृषि के क्षेत्र में हुई प्रौद्योगिक क्रांति से हमारा देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हो गया है। यह एक ऐसी सफलता है जिसे कुछ लोग असंभव समझते थे। योजना-अक्रिया में आपने आधुनिकता का जो शक्तिशाली पुट दिया, उसके कारण ही हमारी प्रौद्योगिक संरचना एक व्यापक आधार पर खड़ी हुई है और विशेषकर ऊर्जा के क्षेत्र में हमारी आधारभूत संरचना मजबूत और विकासशील बनी है।

आपकी कार्य-योजना में किसानों और कामगारों के कल्याण को उच्चप्राथमिकता दी गई। खेतिहरों को कृषि भूमि देने और कृषि मजदूरों की हालत सुधारने के लिए दूरगामी सुधार किये गये। छोटे और सीमान्त किसानों के लिये अपनाये गये कार्यक्रमों के फलस्वरूप अधिक उत्पादकता और आय के रूप में काफी लाभ हुआ है। आपके नेतृत्व में कृषक समुदाय को कर्ज और आधुनिक कृषि संबंधी निवेश प्राप्त हुए तथा लाभकारी कीमतें सुनिश्चित की गईं जिनसे अधिक उत्पादन के लिये वास्तविक प्रोत्साहन मिला है।

तीव्र प्रौद्योगीकरण की आपकी नीति के कारण ही मजबूर बर्ग एक बड़ी सामाजिक शक्ति के रूप में उभरा है। आपकी प्रेरणा से ही पब्लिक सेक्टर ने अर्थ व्यवस्था के क्षेत्र में काफी जंचा स्तर प्राप्त कर लिया है। और मजदूरों की समस्याओं के प्रति आपके सामाजिक रूप से प्रगतिशील दृष्टिकोण से अधिकांश मजदूरों को लाभ हुआ। भारत उन कतिपय विकासशील देशों में है जिनमें ऐसी श्रमिक कानून व्यवस्था है जो मजदूरों के अधिकारों की रक्षा करती है और उन्हें अपनी कुशलता और आय बढ़ाने में उनकी सहायक है।

संकटपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के वातावरण में भारतीय अर्थ-व्यवस्था को अपने ही साधनों से विकसित होने की शक्ति और स्वायत्त प्राप्त हुआ है। आपकी सफलता इस बात से आंकी जा सकती है कि भारत ने विश्वव्यापी मूल्यह्रास एवं मंदी की संकटपूर्ण परिस्थितियों में भी उत्पादन का अद्भुत रिकार्ड कायम रखा है और समायोजन की विश्वव्यापी प्रक्रिया से भी इसमें कोई रुकावट नहीं आई है। आत्मनिर्भरता के हमारे इस महान प्रयास को आपने तीव्र गति और इसके लिये मजबूत आधार प्रदान किया।

भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति आप हमेशा कृतसंकल्प रहें। यही कारण है कि हमारे वैज्ञानिक और शिल्प वैज्ञानिकों में रचनात्मक अनुसंधान की एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति उभरी है। आधुनिक विज्ञान के

इस क्षेत्र में, और विशेषकर परमाणु ऊर्जा तथा अंतरिक्ष विज्ञान के शान्तिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में भारत एक ऐसी शक्ति के रूप में उभर कर आया है जो प्रौद्योगिकी की इस खाई को पाटने में समर्थ है। आपने वैज्ञानिकों को नये आयामों तक पहुँचने के लिये निरन्तर प्रोत्साहित किया, जिसके परिणामस्वरूप, विज्ञान के क्षेत्र में अनेक नये-नये अनुसंधान हुए। जब से इन्दिरा गांधी ने देश का नेतृत्व संभाला तब से इस थोड़े समय में ही महासागर विकास तथा अन्टार्कटिका की खोज-यात्रा इस बात की दर्शाती है कि विकास की दिशा में हमने कितनी दूरियाँ तय कर ली हैं। उनकी धारणा के अनुसार विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी ही जनता की उन्नति के साधन हैं।

अविवेकपूर्ण आर्थिक विकास से होने वाली हानियों के प्रति संवेदनशील रहते हुए, आप उन चन्द अन्तर्राष्ट्रीय विभूतियों में से थीं, जिन्होंने मानवता के भविष्य में पर्यावरण के महत्व को समझा और उस पर जोर दिया। एक भविष्य दृष्टा की तरह, आपने भारत की प्राचीन संस्कृति की दूरवांशिता और अन्तरदृष्टि को सामने रखते हुए 1972 में मानव-पर्यावरण विषय पर स्टॉकहोम में हुए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में अपने भावपूर्ण भाषण में यह स्पष्ट रूप से बताया कि “प्रकृति की अविवेकपूर्ण लूट” किस सीमा तक मानवता के भविष्य के लिये खतरा बन सकती है, और आपने विकास को ऐसी पद्धति की हिमायत की जिसमें इन्मान प्रकृति के साथ तावास्म्य स्थापित करके रह सकता है। हम इस बात के लिये उनके ऋणी हैं कि आपने सच्चे मानव अस्तित्व के लिये हमें अपने बनों, नदियों, तालाबों, आकाश तथा अन्य प्राणियों को सुरक्षित रखने के प्रति सतर्क किया।

निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि ऐसा कोई भी रचनात्मक कार्य नहीं है, चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक प्रभवा सांस्कृतिक क्षेत्र का हो, जिसमें आपने रुचि न ली हो तथा जिसे आपने समृद्ध न किया हो। इस देश की विरासत और उसकी सांस्कृतिक मान्यताओं के प्रति आपकी धनबद्धता अक्षुण्ण थी। इसके फलस्वरूप कला, हस्तकला, रंगमंच, नृत्य और संगीत की सभी विधाओं को प्रबल समर्थन मिला। 1965—74 के दौरान आप संगीत नाटक अकादमी की अध्यक्ष रहें। दक्षिण भारत हिन्दो प्रचार सभा की अध्यक्ष के रूप में आपने उक्त सभा के कार्य में विशेष रुचि दिखायी। बौद्धिक क्षेत्र में स्थायी योगदान के लिये आपको देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों तथा वैज्ञानिक अकादमियों से डाक्टरेट की उपाधियाँ मिलीं। परिवार नियोजन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिये आपको 1983 में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या पुरस्कार प्रदान किया गया।

आपके बहुमुखी कार्यकलापों में से अग्रगण्य के कल्याण कार्य को आपने व्यक्तिगत रूप से विशेष महत्व दिया। ग्रंथों तथा विकलांगों के लिये आपने अनेक कार्यक्रम आरंभ किये। कुष्ठ रोग के इलाज के लिये एक देश व्यापी आन्दोलन चलाया। अग्रगण्य के प्रति आपने जो व्यक्तिगत रुचि दिखाई, उससे उन लोगों में आशा की एक किरण बिखारी दी।

सुविधाहीन वर्गों के उत्थान के लिये आप सतत प्रयत्नशील रहें। अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े वर्गों तथा अन्य कमजोर वर्गों के आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिये आपने कई स्थायी कार्यक्रम तैयार किये जो अब हमारे “गरीबी हटाओ” राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अभिन्न अंग बन गये हैं। महिलाओं के अधिकारों तथा उनकी सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति के लिये आपने सामुदायिक चेतना जागृत की।

पर्वतों के प्रति इन्दिरा गांधी का विशेष अनुराग था। पर्वतीय लोगों और उनकी विशिष्ट जीवन प्रणाली के प्रति आपकी सहानुभूति थी। यही कारण है कि पर्वतीय विकास के लिये विशेष कार्यक्रम बनाये गये। वे भारत के दूर-दराज के इलाकों में गयीं, जिनमें हमारे बाहरी द्वीप भी शामिल हैं। इसमें उनका उद्देश्य यह था कि इन अलग-थलग समुदायों को एक राष्ट्रीय जीवन धारा में मिला दिया जाये। इन इलाकों के लोग

आपको हमेशा अपना समझते थे। आप इनके कल्याण के प्रति सच्ची निष्ठा से समर्पित रहें, आभारस्वरूप, इन लोगों ने आपको असीम स्नेह दिया।

इन्दिरा गांधी स्वयं राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की देन थीं। आपने स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा की गई देश की सच्ची सेवा को स्पष्ट रूप से मान्यता प्रदान की।

आपने युवा कल्याण कार्यों में पर्याप्त समय और शक्ति लगाई। आप इस बात के लिये उत्सुक थीं कि भारत के युवावर्ग खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करे। भारत में एशियाई खेलों का आयोजन करने के अपने वायवे को पूरा करते हुए, विल्ली में प्राधुनिकतम स्टेडियमों की स्थापना तथा अन्य सुविधाओं की व्यवस्था का श्रेय आपको ही है जो अस्य कई महानगरों के लिये स्पर्धा का विषय है। खेलों के विकास के लिये आपने जो सतत प्रोत्साहन व मार्गदर्शन प्रदान किया, उसके मान्यता स्वरूप आपको, उचित रूप से, 1983 में अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक परिषद् का गोल्ड पार्लर प्रदान किया गया।

अहां तक राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न है, सर्वैव ग्रहण रहते हुए, आप हमारी रक्षा सेनाओं के प्राधुनिकीकरण की आवश्यकता के प्रति सजग रहें ताकि सुरक्षा के गिरते हुए माहौल में हमारी सेनाएं नई चुनौतियों का सामना कर सकें। आपने इस नाजुक और महत्वपूर्ण क्षेत्र में भारत को आत्म-निर्भर बनाने के लिए हमारे स्वदेशी प्रयासों को प्रागे बढ़ाने के वास्ते प्रयत्न किए। हमारी रक्षा व्यवस्था की औद्योगिक उन्नति संबंधी नीतियों को आपके सशक्त समर्थन के कारण आज भारत की सशस्त्र सेनाएं राष्ट्र की प्रखंडता की रक्षा करने में पूर्ण रूप से समर्थ हैं, परन्तु आपको हथियारों के विकास के अतिरिक्त उन सैनिकों का भी ध्यान रहता था जो हथियारों का उपयोग करते हैं। हमारे सैनिकों की सेवा शक्तों को सुधारने और उनके मनोबल को ऊंचा रखने के लिए आपने व्यापक नीतियों का सूत्रपात किया। भूतपूर्व सैनिकों की समस्याओं के प्रति आप किस कदर अतिरिक्त थीं, यह उन अनेक उपायों से जाहिर होता है जो सरकार ने उनके रोजगार को सुधारने के लिए किए हैं।

अनेक उपलब्धियों में विशेष रूप से स्मरणीय आपका वह साहस और उत्कृष्ट राजनीतिक कौशल है जो आपने 1971 में बंगलादेश के संघर्ष से निपटने में दिखाया।

इन्दिरा गांधी सम्पूर्ण मानव जाति की प्राकाशाओं की प्रतीक थीं। आप राष्ट्र संघ के आदर्शों और उसके चार्टर के सिद्धांतों के प्रति समर्पित रहें। आप शान्ति और पूर्ण निरस्त्रीकरण के विश्व के प्रमुख समर्थकों में अग्रणी थीं। आप एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की समर्थक रही, जिसमें शान्ति और दयाभाव का सामंजस्य हो और ज्ञान तथा क्षमता, मानव-सेवा के प्रति समर्पित हों। आप पराधीन देशों की स्वतन्त्रता की प्रबल समर्थक थीं। अपने यशस्वी पिता की भांति आप सभी प्रकार के शोषणों के विरुद्ध थीं और आपने विश्व शान्ति के लिए राजनीतिक और सैनिक गठबंधनों को बाधक माना। राष्ट्रों के बीच आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए भी आवाज उठाने में आप अग्रणी थीं। आप गुट-निरपेक्ष आन्दोलन की अग्रणी थीं, जिसे आपने सार्थकता, गतिशीलता और संबद्धता प्रदान की। आप उस आन्दोलन के सातवें गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन की अध्यक्ष चुनी गईं जो मार्च, 1983 में नई दिल्ली में हुआ।

इन्दिरा गांधी ने छतर्नों और चुनौतियों से कभी भी झुंक नहीं मोड़ा। गंभीर खतरों के समय, चाहे वे व्यक्तिगत हों अथवा राष्ट्रीय, आपने अदम्य साहस और धैर्य का परिचय दिया। आप करोड़ों लोगों तक पहुंचीं, उन्हें साहस दिया तथा उन्हीं से जीवन का मन्त्र प्राप्त किया।

आपको अपने करोड़ों देशवासियों से अपार सम्मान मिला, इसके उपलक्ष में राष्ट्र ने आपको 1972 में अपनी उच्चतम उपाधि “भारत रत्न” से विभूषित किया।

स्वदेश में राष्ट्र के कार्यों और समग्र मानवजाति की शान्ति तथा प्रगति के लिए पूर्णतः व्यस्त होते हुए भी, इन्दिरा प्रियदर्शिनी सदा तेजस्वी जीवन शक्ति से आत-प्रोत और प्रयत्नरत रहती थीं और प्रकृति की सभी सुन्दर वस्तुओं में रुचि लेती थीं। परन्तु उस कान्तिमय और सौम्यतापूर्ण उत्कृष्ट जीवन की 31 अक्तूबर, 1984 को, कायरता और विश्वासघातपूर्ण कार्य से आपके अपने ही निवास स्थान पर उन दो व्यक्तियों ने निर्दयता और जघन्यता से समाप्त कर दिया, जिन्हें आपकी सुरक्षा का भार सौंपा हुआ था।

इन्दिरा गांधी के लिए देश की एकता तथा अखण्डता एक पावन कार्य था, जिसके आगे बाकी सभी कार्य गौण थे। देश की एकता को बचाये रखने के लिए आपने साम्प्रदायिक, रूढ़िवाद और सभी प्रकार के धार्मिक रूढ़िवाद के खिलाफ निरंतरता से जोरदार लड़ाई लड़ी। आपने बार-बार देश को यह चेतावनी दी कि साम्प्रदायिकतावादी और समाज-विरोधी ताकतों ने इन्हीं दो हथियारों का इस्तेमाल किया है। आपने उन आवश्यों की रक्षा करते हुए जान दे दी जिन आवश्यों पर हमारे गणतंत्र की एकता तथा अखण्डता टिकी हुई है। भारत की एकता को बनाये रखने में महात्मा गांधी और इन्दिरा गांधी का बलिदान सदियों तक अमर रहेगा।

इतिहास में शायद ही प्रकृष्टा कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो देश के भाग्य से इतना अधिक जुड़ा रहा हो। आप भारत के आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास की सुदृढ़ प्रतीक थीं। आपको मृत्यु उस समय हुई जब आप अपने चरम शिखर पर थीं, जहाँ आपके व्यक्तित्व और प्रभाव का विषय में बोलबाला था।

इन्दिरा गांधी की दुःखद मृत्यु से भारत ने राजनीतिक और आर्थिक विकास के निर्णायक समय पर, एक सदैव समर्पित और प्रतिभावान नेता को दिया है। राष्ट्र इत निर्णयशील, तेजस्वी और कर्णामय व्यक्तित्व का अपार आभारी है। आपके पिता ने स्वयं अपने को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया था जिन्होंने अपने सत-सत से भारत को प्यार किया और इसके बदले में भारत के लोगों ने भी उन्हें प्यार और आदर दिया। यह बात इन्दिरा गांधी के बारे में पूर्णतः सही है। भारत के लोगों का अपने इस महान नेता के प्रति हमेशा असीम प्यार और स्नेह बना रहेगा, जो अपनी अन्तिम सांस तक उनकी सेवा में रत रहेगा।

अपनी मृत्यु से केवल एक दिन पहले आपने यह उद्गार व्यक्त किया था :—

“यदि मैं राष्ट्र की सेवा करते हुए मर भी जाऊँ तो मुझे गर्व होगा। मुझे विश्वास है कि मेरे पुत्र की प्रत्येक रूढ़ इस राष्ट्र की वृद्धि में और इसे शक्तिशाली तथा प्रगतिशील बनाने में सहायक होगी।”

भारत की इस महान सुपुत्री के असामयिक निधन पर समस्त राष्ट्र शोकाकुल है और देश की अखण्डता, सुदृढ़ता और प्रगति के लिए उनके कार्यों के प्रति अपना सम्मान और आभार व्यक्त करता है।

प्र० च० ज्योषाभाय्य,

भारत के राष्ट्रपति का सचिव।

PRESIDENT'S SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi, the 7th November, 1984

No. 114-Pres/84.—The brutal assassination of India's great leader and beloved Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, on October 31, 1984 has plunged the entire nation into deep anguish and profound sorrow. Indira Gandhi, like her illustrious father Jawaharlal Nehru, belonged not only to the people of India but to all humankind. The world has lost an outstanding statesman.

Born at Allahabad on November 19, 1917, Indira Gandhi was influenced in her childhood by Mahatma Gandhi, Motilal Nehru, Jawaharlal Nehru and other great leaders of the Indian freedom movement. From her early years, she was active in the national liberation struggle. During the 1930 movement, she formed the 'Vanar Sena', a children's brigade to help freedom fighters.

In the late twenties, she had her schooling in Europe, where her mother Kamala Nehru spent some time for medical treatment, and later in Pune and Bombay. In 1934, she enrolled in Rabindranath Tagore's Visva Bharati, but had to leave after a few months to accompany her ailing mother to Europe. Kamala Nehru passed away at Lausanne, Switzerland, in 1936. The following year Indira Gandhi went up to Somerville College, Oxford University.

Jawaharlal Nehru's correspondence with her from jail was the formative intellectual influence in her life. His letters, later published as "Letters from a Father to a Daughter" and "Glimpses of World History", stimulated her curiosity and helped mould a questioning and questing spirit, heir to the riches of world civilisation but firmly rooted in Indian culture.

She became a member of the Indian National Congress in 1938. Soon after her return to India in March 1941, she plunged into political activity. On March 26, 1942, she married Feroze Gandhi, who was himself a valiant freedom fighter and known to the family for many years. She attended the session of the All-India Congress Committee in August 1942 which adopted the famous 'Quit India' resolution. Soon thereafter she was arrested and imprisoned until her release in May 1943. In August 1944, her first son Rajiv was born. Her second son Sanjay was born in December, 1946.

Her public activity entered a new phase with India's independence in 1947. She took over the responsibility of running the Prime Minister's House. Besides she was deeply involved in social and child welfare work. The Congress, which had been her political home ever since her childhood, soon drew her into leading political roles, first as member of the Congress Working Committee in 1955 and later as member of the Central Parliamentary Board in 1958. In 1959, she was elected President of the Indian National Congress. She oriented Congress thinking and action towards basic issues confronting Indian society and enthused the younger generation in the task of nation-building.

In September 1960, Feroze Gandhi passed away.

When Jawaharlal Nehru died in May 1964, Indira Gandhi was persuaded by Lal Bahadur Shastri to join his Cabinet as Minister of Information and Broadcasting. On the outbreak of widespread language riots in Tamil Nadu in 1965, Indira Gandhi rushed to the State and by her tact, understanding and statesmanship assuaged the feelings of the people and brought the situation under control.

On January 19, 1966, after the death of Lal Bahadur Shastri she was elected leader of the Congress Parliamentary Party and sworn in as Prime Minister on January 24, 1966. She led the nation in that capacity until March 1977. Having steered her party to success in the General Election of 1967, she undertook a series of moves in the Congress in the direction of radical, social and economic policies. Her fight against the status-quo and vested interests produced sharp ideological conflicts leading to the Congress split of 1969. The overwhelming majority of Congressmen and women rallied round her. In the general election of 1971 she returned to power with a decisive majority a clear vindication of people's approval of her decisions.

In June 1975 she was compelled to declare an internal emergency to meet the threat of subversion of constituted authority. Early in 1977 she called for elections to the Lok Sabha in which the Congress Party was defeated. During 1977—1980 when she was out of power, people witnessed her indomitable courage in the face of a systematic campaign of persecution and vilification. No effort was spared to defame her and her family. Numerous cases were launched against her on the flimsiest of grounds. She was arrested and kept in jail on charges that did not stand up to judicial

scrutiny. Although elected to the Lok Sabha in a by-election she was deprived of her seat in utter disregard of the popular verdict. She faced all this with stoic heroism and continued to champion the cause of the down-trodden and the oppressed. Wherever she went during this period hundreds and thousands of people gathered to demonstrate their respect and affection for her and their confidence in her leadership. In the General Election held in January 1980, the people recalled her to power with a landslide majority.

Earlier in 1978 she had to face another split in her Party because of her steadfast adherence to the basic principles and pro-people ideology of the Congress.

In the eventful years of Indira Gandhi's leadership, Indian society underwent profound changes. While maintaining continuity of the basic strategies and policies of the Nehru period, she transformed the structure of politics by placing the issue of poverty in the forefront of national debate. Her commitment to a just social order was manifested in a series of historic measures beginning with the nationalisation of banks and the abolition of privy purses. This process culminated in the formulation and implementation of the 20-Point Programme with focus on ameliorating the condition of the poor masses.

She was unremitting in her endeavour for the unity and solidarity of the nation. A staunch defender of the secular ideals of the Constitution, she worked tirelessly for the social and economic advancement of the minorities. Her abiding concern for their welfare was reflected in the special measures taken by Government for guarding their religious, cultural and educational rights and for expanding their employment opportunities. She worked indefatigably for eradicating communal violence which she called 'a slur on the fair name of India'.

Her vision of a modern, self-reliant and dynamic economy found concrete expression in the rapid strides made by Indian agriculture, industry and science. The technological transformation of our agriculture has made the country self-sufficient in foodgrains, an achievement few thought was in the realm of possibility. The wide base of our industrial structure and the strength and resilience of the infrastructure, especially of the energy sector, are in no small measure due to the strong impulse of modernisation she transmitted to the planning process.

In her scheme of things the welfare of kisans and workers had high priority. Far-reaching reforms were adopted to give land to the tiller and to improve the lot of agricultural labour. Programmes for small and marginal farmers have yielded substantial benefits in terms of higher productivity and incomes. Under her leadership, the farming community received credit and the inputs of modern agriculture and assured remunerative prices, which have provided real incentives for higher production.

The working class has developed as a major social force, thanks to her strategy of vigorous industrialisation. Under her inspiration the public sector has come to occupy the commanding heights of the economy, and the workers have been a major beneficiary of her socially progressive approach to their problems. India is among the few developing countries with a corpus of labour legislation that protects the rights of workers and enables them to improve their skills and incomes.

In a crisis-ridden international economic environment, the Indian economy has exhibited stability and strength to develop on the basis of its own resources. That India has come through the severest global crisis since the Great Depression with an impressive record of growth and without the disruptions imposed by the worldwide process of adjustment is the measure of her leadership. She gave substance to our striving for self-reliance and created a strong base for rapid advance.

Her unflinching commitment to the cause of India's science and technology has been responsible for the remarkable spurt of creativity shown by our scientists and technologists. In every sphere of modern science, and specially in the sophisticated areas of peaceful uses of nuclear energy and space, India has emerged as a force capable of closing the technological gap. Her constant encouragement to scientists to reach

new frontiers made possible a number of advances. The growth of ocean development within a short time and the expedition to Antarctica mark the distance we have travelled since Indira Gandhi assumed leadership of the nation. For her, science and technology were the means for the betterment of the masses.

Sensitive to the harm that thoughtless and unimaginative economic development can do, she was among the few international figures to have emphasised the supreme importance of environment in our thinking for the future of humanity. Like a seer she drew on the wisdom and insight of our ancient culture to point out, in her moving address at the U.N. Conference on the Human Environment at Stockholm in 1972, the danger posed by the plunder of nature to the future of humanity and pleaded for a pattern of development in which man will live in harmony with nature. We owe to her the consciousness of the need to protect our forests, rivers, lakes, air and wild life for a truly human existence.

Indeed it can be said that there was no creative activity, political, economic, scientific or cultural, in which she did not take interest and which she did not enrich. Her commitment to the heritage of this country and its cultural values was profound. With it came support to all aspects of art, craft, theatre, dance and music. During 1965-74 she was Chairman of the Sangeet Natak Akademi. She took special interest in the work of the Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha as its President. For her enduring contribution in the intellectual sphere she received doctoral degrees and awards from a large number of Universities and scientific academies in this country and abroad. For her outstanding work in the field of family planning she was given the U.N. Population Award in 1983.

Among her many-sided pursuits, the one to which she gave touching personal care was the welfare of the handicapped. She instituted several programmes for the blind and the physically disabled. A nationwide campaign for treatment of leprosy was launched. Her personal concern for the handicapped has brought a new ray of hope for them.

She was a tireless crusader for the uplift of the underprivileged. She initiated concrete and lasting programmes for the economic and social betterment of the scheduled castes, the scheduled tribes, the backward classes and other weaker sections. These are now an integral part of the national anti-poverty programmes. She aroused the conscience of the community for upholding the rights of women and their social and economic advancement.

A lover of mountains, Indira Gandhi's empathy with the hill people and their distinctive pattern of life lay behind the special programmes devised for hill development. She travelled to the remotest parts of India, including our outlying islands, to integrate these isolated communities into national life. The people of these areas claimed her as their own, out of their boundless affection and gratitude for her sincere devotion to their cause.

Herself a product of the national freedom movement, Indira Gandhi accorded concrete recognition to the sterling services rendered to the country by the freedom fighters.

She devoted a great deal of time and energy to youth welfare. She was keen that India's youth should excel in sports. Honouring her commitment to hold the Asian Games in India, she gave to Delhi the most modern stadia and other facilities which are the envy of many a capital city. The constant encouragement and guidance given by her to the development of sports was fittingly recognised by the conferment on her of the Gold Order of the International Olympic Council in 1983.

Never making any compromise where national security was concerned, she was acutely conscious of the need for modernisation of our defence forces to deal with the new challenges posed by the deterioration in our security environment. She provided a vigorous thrust to the indigenous effort to make India self-reliant in this sensitive and vital sphere. Thanks to her unstinted support to policies for technological upgradation of our defence, the Indian armed forces today are fully capable of safeguarding the nation's integrity. She went beyond the machines to the men who use them. For the defence forces she initiated wide-ranging

policies to improve their service conditions and morale. Her personal concern for the problems of ex-servicemen is reflected in a series of measures taken by Government to improve their employment terms.

In a stewardship of many achievements, particularly memorable was the courage and outstanding statesmanship which she showed in dealing with the Bangladesh crisis in 1971.

Indira Gandhi epitomised the aspirations of the entire human race. She was dedicated to the ideals of the United Nations and principles of its Charter. She was one of the world's foremost champions of peace and total disarmament. She stood for an international order in which power was tempered by compassion, and knowledge and capability were at the service of humanity. She was unstinting in her support for the liberation of dependent countries. Like her illustrious father, she was against all forms of exploitation and considered political and military blocs as impediments to world peace. She was also the foremost voice advocating a lessening of economic disparities among nations. She was in the front rank of the Non-Aligned Movement, to which she provided content, dynamism and cohesion. She was elected the Chairperson of that Movement at the Seventh Non-Aligned Summit which met in New Delhi in March 1983.

Indira Gandhi never flinched in the face of dangers and challenges. In times of extreme crises, personal or national, she showed indomitable courage and fortitude. She moved among the millions giving them courage and drawing sustenance from them.

As a mark of esteem in which she was held by hundreds of millions of her countrymen and women the nation conferred its highest award 'Bharat Ratna' on her in 1972.

In spite of her total involvement in the cause of the nation at home and peace and progress for the entire human family, Indira Priyadarshini was always full of vibrant vitality and joy, taking interest in all that was beautiful in nature. But this magnificent life of radiance and charm was brutally and heinously cut short on October 31, 1984, by a dastardly and treacherous act perpetrated in her own

residence by two of those who were charged with her security.

To Indira Gandhi the preservation of the unity and integrity of the country was a sacred mission to which everything else had to be subordinated. For defending the unity of the country she fought boldly and vigorously against communalism, obscurantism, revivalism and religious fundamentalism of all types. She repeatedly warned the nation that communalism and obscurantism were the tools employed by the forces of destabilisation. She laid down her life in defence of the ideals on which the unity and integrity of the Republic are founded. The martyrdom of Mahatma Gandhi and Indira Gandhi for upholding the unity of India will reverberate across the centuries.

Rarely in history has one single individual come to be identified so totally with the fortunes of a country. She became the indomitable symbol of India's self-respect and self-confidence. Death came to her when she was at her peak, when her stature and influence were acclaimed the world over.

In the tragic death of Indira Gandhi, India has lost a leader of unwavering dedication and consistent brilliance at a crucial moment of political and economic development. The nation owes a great debt of gratitude to this decisive, radiant and compassionate personality. Her father had described himself as a person who loved India with all his mind and heart and whom the Indian people in turn deeply loved and revered. This was equally true of Indira Gandhi. The people of India will have abiding affection and respect for this great leader who served them till her last breath.

Only a day before her death she said :—

"Even if I die for the service of the Nation, I shall be proud of it. Every drop of my blood, I am sure, will contribute to the growth of this nation and make it strong and dynamic."

The nation grieves the untimely passing of this great daughter of India and places on record its admiration and gratitude for her work for the country's integrity, strength and advance.

A. C. BANDYOPADHYAY,
Secretary to the President of India.